

वर्ल्ड एम्प्लॉयमेंट एंड सोशल आउटलुक ट्रेंड्स 2022: ILO

प्रलिस के लयि:

वर्ल्ड एम्प्लॉयमेंट एंड सोशल आउटलुक ट्रेंड्स 2022

मेन्स के लयि:

महामारी के बाद से बेरोज़गारी, वभिनिन क्षेत्रों पर महामारी का प्रभाव

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन](#) (ILO) ने 'वर्ल्ड एम्प्लॉयमेंट एंड सोशल आउटलुक ट्रेंड्स' (WESO Trends) 2022 शीर्षक से एक रपिर्ट जारी की।

- रपिर्ट के मुताबकि, रोज़गार स्थिति काफी नाजुक बनी हुई है, क्योंकि भवषिय में महामारी को लेकर अनश्चिति स्थिति बनी हुई है।
- वर्ल्ड एम्प्लॉयमेंट एंड सोशल आउटलुक ट्रेंड्स में वर्ष 2022 और वर्ष 2023 के लयि व्यापक श्रम बाज़ार अनुमान भी शामिल हैं। यह आकलन बताता है कि दुनिया भर में श्रम बाज़ार में कसि प्रकार सुधार हुआ है और जो महामारी से उबरने के लयि वभिनिन राषट्रीय दृषटकियों को दर्शाता है और श्रमकों तथा आर्थिक क्षेत्रों के वभिनिन समूहों पर प्रभावों का वश्लेषण करता है।

प्रमुख बडि

- रोज़गार**
 - वैश्विक बेरोज़गारी वर्ष 2023 तक पूर्व-कोवडि-19 स्तरों से ऊपर रहने की आशंका है।
 - वर्ष 2019 के 186 मिलियन की तुलना में वर्ष 2022 में यह 207 मिलियन होने का अनुमान है।
- वैश्विक कार्य घंटे:**
 - वर्ष 2022 में यह उनके पूर्व-महामारी स्तर से लगभग 2% कम होगा, जो कि 52 मिलियन पूर्णकालिक नौकरियों के नुकसान के बराबर है। यह घाटा वर्ष 2021 में ILO के पूर्वानुमान से दोगुना है।
- वैश्विक श्रम बल भागीदारी:**
 - अनुमान है कि वर्ष 2022 में लगभग 40 मिलियन लोग वैश्विक श्रम शक्ति में भाग नहीं लेंगे।
- क्षेत्रीय अंतर:**
 - यह प्रभाव विकासशील देशों के लयि विशेष रूप से गंभीर रहा है, जिन्होंने महामारी से पहले भी उच्च स्तर की असमानता और अधिक भनिन कार्य परस्थितियों तथा कमज़ोर सामाजिक सुरक्षा दायित्वों का अनुभव किया था।
 - कई नमिन और मध्यम आय वाले देशों के पास टीकों की पहुँच कम है और संकट को दूर करने के लयि सरकारी बजट का वसितार करने की सीमिति गुंजाइश है।
- स्पष्ट रूप से अन्य प्रभाव:**
 - रपिर्ट में श्रमकों और देशों के समूहों के बीच होने वाले संकट के प्रभाव में भारी अंतर की चेतावनी दी गई है, जबकि विकास की स्थिति की परवाह कयि बिना यह लगभग हर राज्य के आर्थिक वित्तीय एवं सामाजिक बनावट को कमज़ोर कर रहा है।
 - श्रम बलों की घरेलू आय और सामाजिक तथा राजनीतिक सामंजस्य के लयि संभावति दीर्घकालिक परिणामों के साथ क्षतपूरता हेतु अधिक समय की आवश्यकता है।
- वभिनिन क्षेत्र:**
 - कुछ क्षेत्र, जैसे यात्रा और पर्यटन विशेष रूप से बुरी तरह प्रभावति हुए हैं, जबकि अन्य क्षेत्र जैसे कि सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधति क्षेत्र फले-फूले हैं।
- महिलाओं और युवा जनसंख्या पर प्रभाव:**
 - श्रम बाज़ार संकट से महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक प्रभावति हुई हैं और यह जारी रहने की संभावना है।
 - शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों के बंद होने से युवाओं, खासकर उन लोगों के लयि जिनके पास इंटरनेट नहीं है, दीर्घकालीन प्रभाव पड़ेगा।
- अपेक्षति रकिवरी:**

- व्यापक श्रम बाज़ार में सुधार के बिना इस महामारी से कोई वास्तविक रिकवरी नहीं हो सकती है।
- सतत रिकवरी संभव है लेकिन यह अच्छे काम के संधिधार्तों पर आधारित होना चाहिये, जिसमें स्वास्थ्य और सुरक्षा, समानता, सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक संवाद शामिल हैं।
 - नए श्रम बाज़ार का पूर्वानुमान भारत जैसे देश के लिये नीतिनियोजन हेतु महत्त्वपूर्ण हो सकता है, जहाँ अधिकांश काम अनौपचारिक है, ताकि आगे रोज़गार संबंधी नुकसान और काम के घंटों में कटौती को रोका जा सके।

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन

परिचय

- इस संगठन को वर्ष 1919 में **वर्साय की संधि** के हिससे के रूप में बनाया गया था, जो कि इस विश्वास के साथ गठित किया गया था कि सार्वभौमिक और स्थायी शांतिभी प्राप्त की जा सकती है जब यह सामाजिक न्याय पर आधारित हो।
 - वर्ष 1946 में यह **संयुक्त राष्ट्र** की एक विशेष एजेंसी बना।
- यह एक त्रिपक्षीय संगठन है, जो अपने कार्यकारी निकायों में सरकारों, नियोक्ताओं और श्रमिकों के प्रतिनिधियों को एक साथ लाता है।

सदस्य

- भारत ILO का संस्थापक सदस्य है और इसमें कुल 187 सदस्य हैं।
- वर्ष 2020 में भारत ने **ILO के शासी निकाय की अध्यक्षता** ग्रहण की।

मुख्यालय

- जनिवा (स्वटिज़रलैंड)

पुरस्कार

- वर्ष 1969 में ILO को राष्ट्रों के बीच भाईचारे और शांति के संदेश को बढ़ावा देने, श्रमिकों के लिये बेहतर कार्य एवं न्याय प्रणाली स्थापित करने और अन्य विकासशील देशों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिये **नोबेल शांतिपुरस्कार** से सम्मानित किया गया था।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Reference URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/ilo-world-employment-and-social-outlook-trends-2022>

